AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

Mooc का महत्वः वर्तमान परिपेक्ष्य में

ORIGINAL ARTICLE

Author

तनुजा गुप्ता
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
मां विंध्यवाशिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन
पद्मा, हजारीबाग, झारखंड, भारत

शोध सार

MOOCs अर्थात् Massive Open Online Course आधुनिक डिजिटल दुनिया का एक बेहतरीन शैक्षिक कार्यक्रम है। जैसा कि इसके नाम में शामिल है यह ऑनलाइन इंटरनेट के जरिये दूरस्थ शिक्षा का एक माध्यम है जहाँ बिना किसी बाध्यता के, बिना किसी सीमा के, दुनिया में कहीं भी, किसी भी समय वृहद् पैमाने पर शिक्षा हासिल किया जा सकता है। आपने इससे पहले डिस्टेंस एजुकेशन के बारे में सुना होगा। डिस्टेंस एजुकेशन में लोग घर बैठे पढाई कर सकते हैं। दूरस्थ शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थान अपने विद्यार्थियों को डाक के जरिये अध्ययन सामग्री भेजती है, और विद्यार्थी बिना किसी मदद के स्वयं ही शिक्षा ग्रहण करता है लेकिन, MOOCs इस डिस्टेंस एजुकेशन का अधिक उत्कृष्ट नमूना है। MOOCs कार्यक्रम के तहत विद्यार्थी बहुत ही आसानी से डिजिटल सामग्री और इंटरनेट के जरिये अधिक बेहतर तरीके से सीख सकता है। MOOC एक interactive learning platform उपलब्ध कराता है जहाँ एक विद्यार्थी Audio visual system में लेक्चर देख और सुन सकता है, प्रॉब्लम डिस्कस कर सकता है, ऑनलाइन टेस्ट दे सकता है और अंततः सर्टिफिकेट भी हासिल कर सकता है। दुनिया में बहुत से फेमस यूनिवर्सिटीज जैसे कि: Ball State University, University of Miami, University of North Carolina, University of Tasmania, University of Cape Town, University of Leeds, Brown University, Hong Kong University इत्यादि। MOOCs platform की शुरुआत बहुत पहले हो चूका है। भारत में MOOC कार्यक्रम के तहत करीब 12 लाख अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा चूका है।

मुख्य शब्द

MOOC, विद्यार्थी, इंटरनेट, शिक्षा.

MOOC एजुकेशन को पूरे विश्व में पसंद और प्रोत्साहित किया जा रहा है। खासकर जब विश्व कोरोना के संकट से जूझ रहा था तो उस समय ऑनलाइन एजुकेशन के द्वारा ही बच्चे के भविष्य की संवारना तथा निखारा जा रहा था। यह एक वरदान के रुप में साबित हो रहा है। MOOC बहुत सारे ऐसे कोर्सेस है जो निःशुल्क करवाए जा रहे है। MOOC भी कुछ ऐसा ही एजुकेशन कोर्सेस है जो कि बच्चो को इंटरनेट पर बिना किसी शुल्क के उपलब्ध कराये जाने वाले स्टडी कोर्स लोकप्रिय है। इसका सीधा कारण है कि कोर्सेस को कोई भी व्यक्ति दुनिया में कही भी कर सकते है।

यह कोर्स दुनिया के बढ़िया युनिवर्सिटी से कोर्स मेटेरियल बेहतरीन प्रोफेसर गाइडेन्स प्राप्त कर सकते है। सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें अधिकांश निःशुल्क है। तथा ऐसें विषय पर क्लास ले सकते है जो विषय कॉलेज में नही पढ़ाया जाता है। यह कोर्स उस सब्जेक्ट का भी कर सकते है जिससे ज्ञान का भंडार बढ़े।

Mooc के तहत कोर्सेस करने का निर्णय लेते है तो हम दुनिया भर के स्टुडेन्ट के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा करने का अवसर मिलते है। आजकल पी आर रिव्यु और वास्तविक चर्चा Mooc के तहत पाई जाने वाली अधिकांश कोर्सेस के नये कौशल सिखने के लिए इस्तेमाल करते है जबकि कुछ अन्य विद्यार्थी अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए करते है। अगर विद्यार्थी को कक्षा में किसी विशेष विषय के बेसिक सिखा दिया जाय तो वह Mooc प्लेटफार्म मे उस विषय के अगले स्तर की क्लास ले सकते है। Mooc की कक्षा में शिक्षक जब टॉपीक को पढ़ाते है, तो उस विषय को तुरंत समझ सकते है और महत्वपूर्ण सवाल पूछ सकते है। अधिकांश विद्यार्थी MOOC को हायर एजुकेशन के भविष्य के रुप में देखते है। Mooc बेस आधारित मुक्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम है, जो शिक्षा के क्षेत्र में भौगोलिक रुप से दुरस्थ क्षेत्रों के छात्रो की भागीदारी सुनिश्चित करता है। यह उच्च शिक्षा और कर्मचारी विकास के लिए मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करता है। MOOC के पास बहुत सारी चुनौतियाँ भी है, जैसे यह तत्त्काल शंका का समाधान नही कर पाती है साथ ही पाठ्यक्रम को पूरा करने की प्रेरणा भी नही मिलती है इसी कारणवश विद्यार्थी बीच में ही छोड़ देते है।

मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स या Mooc ऐसी ऑनलाइन कोर्स है जो बड़ी आबादी की जरुरतो को पूरा करती है। हाल के वर्षो में प्रौधोगिकी से प्रभावित कक्षा निर्देश के साथ तकनीकि प्रेमी छात्रो की संख्या में बृद्धि हो रही है। छात्र आबादी के बीच ऑनलाइन पाठ्क्रमो की लोकप्रियता बढ़ रही है। 21वी सदी के शिक्षार्थी के लिए औपचारिक शिक्षा जारी रखना लगभग असंभव है। इस परिवेश में ऑनलाइन सिखने नेतृत्व करना सिखने के लिए प्रेरित करना, घर बैठे पाठ्यक्रम संबंधित कोर्स करना, विद्यार्थीयो को प्रेरित करता है। यह कोर्स विद्यार्थीयो को घर बैठे आराम से कोर्स करने को प्रेरित करता है तथा एक विश्वसनीय प्रमाण पत्र प्राप्त करने में सक्षम बनाता है, उनकी योग्यताएँ ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम यानी MOOC कोर्स की और प्रेरित करता है, तथा एक बड़े पैमाने में शिक्षण कारने वाले आबादी को प्रभावित करता है।

आजकल दुनिया भर में Mooc कोर्सेस काफी लोकप्रिय है और यह एक सीधा सा कारण है कि इस कोर्सेज को कोई भी व्यक्ति दुनिया में कही भी कर सकता है। आज दुनिया के कुछ सबसे बड़ी यूनिवर्सिटीज से कार्स और बेहतरीन प्रोफेसर से प्रोफेशनल गाइडेन्स प्राप्त कर सकते है। सबसे अच्छी बात तो यह है कि इसमें से अधिकांश कोर्स मुफ्त है। आप इन्हे अपने सुविधा और गति से पूरा कर सकते है। आप किसी ऐसे सब्जेक्ट पर क्लास ले सकते है जो आपके कॉलेज में नही पढ़ाया जाता है या आप सिर्फ इसलिए कोर्स करते है ताकि अपने ज्ञान का भंडार हो और आप अपनी विशिष्ठता वाले विषय के किसी टॉपिक पर अन्य प्रोफेसरो के बारे में विचार कर सके।

ऑनलाइन लर्निंग का सबसे बडा पक्ष यह है कि आप किसी भी विषय या कार्स में क्लास ले सकते हैं। आप को क्लास लेने के लिए कोई टेस्ट या कोई परीक्षा पास करने की आवश्यकता नही है। चाहे आप बायोटेकनोलॉजी या डिजीटल मार्केटिंग में क्लास लेना चाहते है। नए छात्रो के लिए शुरुआती स्तर पर नए कोर्स तथा किसी भी सब्जेक्ट के लिए टॉपिक में कुछ जानकरी रखने वालो छात्रो के लिए उन्नत स्तर के कोर्सेस उपलब्ध है।

जब आप Mooc के स्तर कोई कोर्स करने का निर्णय लेते है तो आप विश्व भर के छात्रो के साथ अंतराष्ट्रीय स्तरो पर हस्तक्षेप और चर्चा करने के अवसर मिलते है। Mooc छात्रो को पढाने के लिए केवल एक उपकरण नही है बल्कि उनका उपयोग शिक्षित करने के लिए भी किया जाता है। न्यू टीचर सेन्टर (NTC) ने युवा K–12 शिक्षक को विकसित करने के लिए उच्च गुणवता वाले समाधान की पेशकश करने के लिए कौरसेरा के साथ साझेदारी की है। NTC की योजना प्रथम वर्ष शिक्षण शुरुआत से सफलता'जैसे पाठ्यक्रम प्रदान करके की है। "जो छात्रो के लिए अपेक्षाओ को स्थापित करने और संप्रेषित करने", छात्रो के साथ और उनके बीच सकारात्मक संबंध बनाने, व्यवहार संबंधी रोकथाम और हस्तक्षेप के उद्देश्य से सम्बंध और रणनीति प्रदान करते है। सीखने के माहौल को व्यवस्थित

करना और दिनचर्चा और प्रक्रियाओ को स्थापित करना और बनाए रखना जो छात्र सीखने का समर्थन करते है। NTC "लिटरेसी डिजाइन कौलेबीरोटिव" और "मैथ डिजाइन कौलेबीरोटिव"'जैसे विषय से संबंधित अधिक पाठ्यक्रम भी शुरू कर रहा है जो मुख्य रुप से अपनी संबंधित एकाग्रता के लिए शिक्षण कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करते है। NTC संस्थापक और सीईओ एलेन मोइर का कहना है कि उन्होने NTC शुरुआत इसलिए की क्योकि इन्होने दुर्भाग्यपूर्ण संख्या में सर्वश्रेष्ठ और प्रतिभाशाली नए शिक्षको को पर्याप्त समर्थन की कमी के कारण अपना पेशा छोडते हुए देखा। उनका मानना है कि Mooc के माध्यम से NTC उन शिक्षक की एक व्यापक श्रेणी तक पहुँचा सकता है। वह लिखते है कि "भविष्य में शिक्षक तेजी से अपने स्वंय के पेशेवर सिखने की जिम्मेदारी लेगें और यह सुनिश्चित करना हमारा काम है कि उनके पास उच्च गुणवता वाले व्यवसायिक विकास के अवसरों तक आसान पहुँच हो", यह उसी दिशा में एक कदम है।

Mooc की चुनौतियाँ

सकारात्मक विशेषताओ के साथ Mooc के आसपास कुछ चुनौतियॉ भी है। क्रीड – डाइकोगू और कलार्म ने कहा है कि

- यह एक शैक्षिक रामबाण है।
- पूरी तरह से सहकर्मी मूल्यांकन पद्धति, मजबूत व्यापार राजस्व मॉडल, सफल शैक्षणिक डिजाइन या धोखधडी और साहित्यिक चोरी के समाधान प्रदान करने के लिए प्रयाप्त विकसित नही हुआ है।
- मुल्यांकन में बहुविकल्पिय प्रश्नो का समावेश होता है।
- प्रतिभागियो के लिए प्रोफेसर के साथ संबंध बनाना मुश्किल है।
- नामांकित लोगों के शायद ही कभी भी शोध पत्र लिखने का मौका नही मिलता है।
- Mooc में अक्सर प्रभावी निर्देशात्मक डिजाइन की कमी होती है।

लेखक इस बात पर जोर देते है कि निर्देशात्मक डिजाइन सर्वोतम प्रयासो का पालन करने की आवश्यकता है।

Mooc को सफल बनाने के लिए इसके स्वरुप को बदलने की आवश्यकता है। इसके अंतर्गत इसमें जो छात्रो को फ्री में जो ऐजुकेशन प्रदान की जा रही है उससे उन्हे कुछ रुपया देकर कोर्स करवाये जाय तथा छात्रो की कौशल के विकास हेतु बडे कॉर्पोरेट के साथ सझेदारी कर कोर्स का संचालन किया जाय तथा इसके अंतर्गत मुफ्त प्रिमियम दोनो तरह की सेवाए प्रदान की जाये। भारत जैसे देश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारी चुनौतियाँ का सामना कर रहा है जो हाल के वर्षो में कोविड 19 के चलते यह चुनौती और भी प्रबल हो गई थी। इस समय बड़े पैमाने में मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम Mooc चला कर केवल भारत की उच्च शिक्षा सम्बन्धी चुनौतियो को पूरा किया जा सकता है। पिछले 2 वर्षो के दौरान Mooc ने अंतर्राष्ट्रीय मिडिया का ध्यान आर्कषित किया है। विश्व भर में कुछ अग्रणी विश्वविद्यालय ने कोर्सेज और ईडीऐक्स जैसे Mooc प्रदाताओ के साथ भागीदारी भी शुरु कर दी है ताकि विश्व भर के लाखो विद्यार्थीयो के उच्च स्तर के ऑनलाइन पाठ्यक्रम निःशुल्क मुहैया कराया जा सके।

भारत में Mooc की स्थिति

भारत उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारी चुनौतियों का सामना कर रहा है। सन् 2007 में प्रधानमंत्री ने कहा था कि भारत के लगभग आधे ज़िलों में उच्चशिक्षा में नामांकन "बहुत ही कम" है और दो तिहाई भारतीय विश्वविद्यालय और 90 प्रतिशत भारतीय कॉलेज गुणवत्ता की दृष्टि से औसत से भी बहुत नीचे हैं। इसमें हैरानी की कोई बात नहीं है कि शिक्षा की माँगों को पूरा करने में शासन की विफलता के कारण ही भारत के संभ्रांत और मध्यम वर्ग के विद्यार्थी भारत में और भारत के बाहर भी सरकारी संस्थाओं को छोड़कर निजी संस्थाओं की ओर रुख करने लगे हैं. सरकारी संस्थाओं से यह पलायन भारतीयों की शिक्षा संबंधी माँगों को पूरा करने में शासन की क्षमता को निरंतर कमज़ोर कर रहा है और इस समस्या को और भयावह बनाता जा रहा है। दुर्भाग्यवश निजी संस्थाओं में संकीर्ण व्यावसायिक मार्ग पर चलने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है और आंतरिक प्रशासन कमज़ोर होने लगा है और शासकीय नियमों में शिथिलता आने लगी है।

बड़े पैमाने पर मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम (एमओओसी) चलाकर न केवल भारत की उच्च शिक्षा संबंधी चुनौतियों का पूरी तरह से सामना किया जा सकता है, बल्कि उच्च शिक्षा में भारत की पहुँच और गुणवत्ता को कुछ हद तक बढ़ाया भी जा सकता है। पिछले दो वर्षों के दौरान एमओओसी ने अंतर्राष्ट्रीय मीडिया का ध्यान आकर्षित किया है। विश्व–भर के कुछ अग्रणी विश्वविद्यालयों ने कोर्सेरा औरईडीऐक्स जैसे एमओओसी प्रदाताओं के साथ भागीदारी भी शुरू कर दी है ताकि विश्व–भर के लाखों विद्यार्थियों को उच्च स्तर के ऑन–लाइन पाठ्यक्रम निःशुल्क मुहैय्या कराये जा सकें।

एमओओसी के समर्थक सामाजिक, आर्थिक या राष्ट्रीय पृष्ठभूमि की परवाह किये बिना सभी को शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराने की संभावित क्रांति की बात करने लगे हैं. लेकिन कुछ लोग इस बात को लेकर सतर्कता बरतने की बात करते हैं कि इससे उच्च शिक्षा संबंधी स्थानीय संस्थाओं का महत्व घटने लगेगा और भौतिक (फ़िज़िकल) विश्वविद्यालयों में विशिष्ट संभ्रांत वर्ग के छात्रों को व्यक्तिनिष्ठ शिक्षा की सुविधा प्रदान करके शैक्षणिक असमानता को और भी बढ़ावा मिलेगा, जबकि अधिकांश छात्र वर्चुअल शिक्षा तक सीमित रह जाएँगे, जिससे शिक्षा की लागत में तो कमी आ जाएगी, लेकिन गुणवत्ता में भी गिरावट आ जाएगी।

भारत में उच्च शिक्षा के संदर्भ में एमओओसी के संभावित प्रभाव को समझने के लिए और इस बात पर विचार करने के लिए कि एमओओसी किस तरह से प्रभावी और समान परिणाम हासिल कर सकता है, हमें पहले एमओओसी के भागीदारों को अच्छी तरह से समझना होगा। इस समस्या के समाधान के लिए पैन्सिल्वेनिया विश्वविद्यालय ने उन तमाम विद्यार्थियों का सर्वेक्षण कराया था जिन्होंने कम से कम कोर्सेरा केएमओओसी (जो विश्व का सबसे बड़ा एमओओसी प्रदाता है) के किसी एक पाठ्यक्रम में नामांकन करवाया हो। जुलाई 2013 में यह सर्वेक्षण करवाया गया था और उस समय पैन ने 800,000 से अधिक विद्यार्थियों को बत्तीस पाठ्यक्रमों की पेशकश की थी।

कोर्सेरा द्वारा संचालित एमओओसी लेनेवाले विद्यार्थियों में अमेरिका के बाद भारतीय विद्यार्थियों की संख्या दूसरे नंबर पर (अर्थात् 10 प्रतिशत) है। उपयोगकर्ताओं के उनके आईपी पतों के आधार पर किये गये भू–देशीय विश्लेषण से पता चलता है कि इस उपयोगकर्ताओं में से अधिकांश उपयोगकर्ता भारत के शहरी इलाकों तक ही सीमित हैं। इनमें से 61 प्रतिशत उपयोगकर्ता भारत के पाँच बड़े शहरों में से किसी एक शहर में बसे हुए हैं और 16 प्रतिशत उपयोगकर्ता अगले पाँच बड़े शहरों में बसे हुए हैं। मुंबई और बैंगलोर में उपयोगकर्ताओं की तादाद सबसे ज़्यादा है. भारत के कुल कोर्सेरा विद्यार्थियों में से 18 –18 प्रतिशत इन दोनों शहरों से हैं।

लगभग दो हज़ार विद्यार्थियों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर किये गये इस सर्वेक्षण से पता चलता है कि एमओओसी लेने वाले अधिकांश भारतीय विद्यार्थी युवा हैं, पुरुष हैं और सुशिक्षित भी हैं। इनमें से दो तिहाई विद्यार्थियों की उम्र तीस से भी कम है और तीन–चौथाई से अधिक विद्यार्थी पुरुष हैं और उनके पास कॉलेज की डिग्री भी है। कॉलेज की डिग्री वाले कुछ विद्यार्थी तो स्नातकोत्तर की पढ़ाई भी कर रहे हैं और इनमें से अधिकांश पूर्णकालिक नौकरी कर रहे हैं और शेष विद्यार्थी या तो स्व–नियोजित हैं या अंशकालीन नौकरी कर रहे हैं। उपयोगकर्ताओं के आधार पर किये गये सर्वेक्षण पर हैरानी की कोई बात नहीं है और यह ठीक उसी तरह है जैसे हाल ही में सैलफ़ोन, नया मीडिया और अन्य प्रौद्योगिकी अपनाने वाले उपयोगकर्ताओं की स्थिति है।

इस सर्वेक्षण से पता चलता है कि गणित, मानविकी और सार्वजनिक स्वास्थ्य के बाद विद्यार्थी सबसे अधिक व्यवसाय, अर्थशास्त्र और समाज विज्ञान के पाठ्यक्रमों को ही लेना पसंद करते हैं। यह तथ्य कि एमओओसी के उपयोगकर्ताओं में सबसे अधिक संख्या भारतीयों की है, या इसबात की ओर इंगित करता है कि अच्छी किस्म की शिक्षा की भारत में बेहद माँग है, जिसे अभी तक पूरा नहीं किया जा सका है लेकिन यदि हम चाहते हैं कि एमओओसी भारत की उच्च शिक्षा की चुनौतियों को पूरा करने के लिए सक्षम और सही मार्ग प्रदान करे तो हमें बहुत–से काम करने होंगे।

सर्वप्रथम हमें बुनियादी प्रौद्योगिकीय ढाँचा तैयार करना होगा, जिसमें कंप्यूटरों, मोबाइल उपकरणों और उच्च–गति वाले इंटरनैट की सुविधाओं को और विकसित करना होगा ताकि भारत के अधिकाधिक लोगों तक

ऑन–लाइन शिक्षा की पहुँच बढ़ायी जा सके। जब तक प्रौद्योगिकीय बाधाएँ दूर नहीं होंगी तब तक केवल संभ्रांत वर्गके कुछेक विद्यार्थी ही शिक्षा के इस विकल्प का चुनाव कर सकेंगे और इससे भारत में शिक्षा के अवसरों में असमानता की स्थिति और भी बिगड़ती जाएगी।

एमओओसी प्रदाताओं को कम से कम लागत वाली, व्यापक कवरेज वाली और अपने स्वामित्ववाली मोबाइल फ़ोन की भारतीय क्रांति से अपने–आपको जोड़ना होगा। दिसंबर 2013 में कोर्सेरा ने ऐसे मोबाइल ऐप जारी किये थे जिनकी मदद से उपयोगकर्ता पाठ्यक्रमों को ब्राउज़ कर सकते हैं, उनमें अपना नामांकन करा सकते हैं, लैक्चर देख सकते हैं और मोबाइल उपकरण से ही पूरी प्रश्नोत्तरी भर भी सकते हैं। हालाँकि फ़ोरम पर पोस्ट करने और प्रश्नोत्तरी भरने से इतर कुछ असाइनमैंट अभी भी मोबाइल पर उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी कोर्सेरा द्वारा जारी किये गये मोबाइल ऐप भारत जैसे देश में जहाँ ब्रॉडबैंड कवरेज बहुत सीमित है, एमओओसी की पहुँच को सुगम बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। एमओओसी प्रदाताओं को मोबाइल की दुनिया में प्रवेश करने के लिए बैंकिंग उद्योग के मुकाबले ज़्यादा बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि उनकी वीडियो की विषय–वस्तु, प्रश्नोत्तरी और असाइनमैंट के लिए स्मार्टफ़ोन की ज़रूरत पड़ती है, जबकि मोबाइल बैंकिंग के कुछ काम मात्र एसएमएस सेवाओं के ज़रिये ही निपटाये जा सकते हैं लेकिन 3जी और 4जी के इंटरनैट के कारण अब स्मार्टफ़ोन और टेबलैट की सुविधा भारत में बढ़ती जा रही है और जैसे–जैसे उनके दाम कम होते जाएँगे, उनकी सुविधाओं का भी तेज़ी से विस्तार होता जाएगा।

दूसरी बात यह है कि दुनिया के कुछ सबसे बढ़िया विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित अधिकांश एमओओसी बहुत ही चुनौतीपूर्ण और माँग वाले पाठ्यक्रम हैं, जिनके लिए अधिकांश प्रत्याशी विद्यार्थी तैयार नहीं हैं। विश्वविद्यालय–स्तर के पारंपरिक पाठ्यक्रम चलाने के अलावा एमओओसी प्रदाताओं को पूर्व विश्वविद्यालय–स्तर के पाठ्यक्रम भी चलाने चाहिए जिससे कि प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की पूर्ति की जा सके। इसके अलावा उन तकनीकी प्रमाणीकरणों की भी भारी माँग है, जो विद्यार्थियों को उच्च–कौशल वाले क्षेत्रों में व्यावसायिक प्लेसमैंट के लिए तैयार करते हैं। इन ज़रूरतों के लिए तैयार होने पर एमओओसी उन संस्थाओं के बोझ को कम करने में मदद कर सकते हैं जो पहले से ही ऐसे प्रमाणीकरण की पेशकश कर रहे हैं और इससे और अधिक विविध और प्रतियोगी तकनीकी प्रमाणीकरण उद्योग को विकसित करने में मदद मिलेगी। भारत में शैक्षणिक माँगों में बहुत ही अधिक विविधता है और एमओओसी प्रदाताओं को यह सोचना चाहिए कि इन माँगों की पूर्ति कैसे की जा सकती है। एमओओसी प्रदाता भारत की असमान शैक्षणिक माँगों की पूर्ति के लिए विविधीकरण की नीति को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं।

निष्कर्ष

शैक्षणिक माँगों को समझने और उन्हें पूरा करने के लिए एमओओसी प्रदाताओं को भारत में निवेश करना होगा। इस तथ्य के बावजूद कि कोर्सेस का सबसे बड़ा एमओओसी प्रदाता है और कोर्सेस ने न तो अब तक किसी भी भारतीय संस्था के साथ पाठ्यक्रमों को चलाने की पेशकश की है और न ही वे भारतीय भाषाओं के कोई पाठ्यक्रम ही चलाते हैं, फिर भी एमओओसी के सबसे अधिक विद्यार्थी भारतीय ही हैं। दूसरे एमओओसी प्रदाता ईडीऐक्स ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), बंबई के साथ भागीदारी ज़रूर की है, लेकिन उसके विस्तार की अभी और भी गुंजाइश है। भारत में उच्च शिक्षा के संदर्भ में पूर्ति और भारी माँग के बीच असंतुलन और किफ़ायती व अच्छी किस्म की शिक्षा की आवश्यकता को देखते हुए, भारत एमओओसी प्रौद्योगिकी के विकास के लिए आदर्श स्थान है। भारतीय संस्थाओं को सक्रिय भागीदार बनकर सभी तरह की पृष्ठभूमि से आने वाले भारतीय विद्यार्थियों के लिए उनकी विशेष रुचि के आधार पर भारतीय भाषाओं की विषयवस्तु को डिज़ाइन करना चाहिए और उसे उपलब्ध कराना चाहिए।

अधिकाधिक भारतीय विद्यार्थियों तक एमओओसी की पहुँच को बढ़ाकर भी भारतीय उच्च शिक्षा की बुनियादी समस्याओं को सुलझाया नहीं जा सकेगा लेकिन जैसा कि हाल ही की घटनाओं से पता चलता है कि नयी प्रौद्योगिकी के ज़रिये भारत–भर में विविध प्रकार की विषय वस्तुओं को भी बहुत तेज़ी से प्रसारित किया जा सकता

है। एमओओसी अधिकाधिक विद्यार्थियों को बहुत कम लागत पर उच्च स्तर की विषय वस्तु उपलब्ध करा सकते हैं। अगर इन पाठ्यक्रमों की पहुँच को सुगम बनाने के मार्ग में आने वाली प्रौद्योगिकीय, शैक्षणिक और सांस्कृतिक बाधाओं को दूरकर दिया जाए तो लाखों भारतीय विद्यार्थी अच्छे स्तर की उच्च शिक्षा सहजता से प्राप्त कर सकेंगे और इससे नाटकीय रूप में भारत में और विश्व–भर में भी उच्च शिक्षा के परिदृश्य को बदला जा सकेगा।

संदर्भ सूची

1. https://elearningindustry.com/thedefinition-of-a-mooc, Accessed on 10/01/2025.
2. www.insidehighered.com, Accessed on 12/01/2025.
3. Massive open online courses in Wikipedia retrieve, January16, 2016 from https://enwikipedia.org/wiki/manive open online course, Accessed on 09/01/2025.
4. https://guideslibrary.utoronto.calligiterlbed.agogy, Accessed on 15/01/2025.

––==00==––